साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 51, दिसम्बर(द्वितीय) , 2018

श्री परांकुशाचार्य की कृतियों का साहित्य और समाज के क्षेत्र में वैश्विक अवदान

डॉ. सुबोध कुमार शांडिल्य

आधुनिक समय में वैश्वीकरण अर्थात् भूमंडलीकरण जिसे अंग्रेजी में ग्लोबलाइजेशन(Globalization) शब्द से अभिहित किया जाता है, एक बहुप्रचलित शब्द है। इस शब्द का आधुनिक अर्थ उदारीकरण की दौर में विश्व स्तर पर खुला व्यापार करने के सुविधाओं से लगाया जाता है। इसके तहत सम्पूर्ण विश्व एक आँगन के समान है जहाँ सूचनाओं और सामाग्रियों का आदान-प्रदान किया जा सकता है। इसका उद्देश्य निहित स्वार्थों से उपर उठकर समस्त विश्व के मंगल हेतु जुड़ने से है। जबकि इसका निहितार्थ इसके विपरीत है। वैश्वीकरण वास्तव में 'सब जन हिताय, सब जन सुखाय' की भावना पर अवलंबित है, लेकिन कुछ विकसित एवं सामर्थ्यवान राष्ट्र अपने हित में इसका उपयोग कर उपभोक्तावादी संस्कृति को थोपने का काम कर रहे हैं। ऐसे में अपनी भाषा, संस्कृति, साहित्य एवं सामाज को संरक्षित रखने की महती चुनौती किसी भी राष्ट्र के सामने मुँह बाये खड़ी है। श्री परांकुशाचार्य के रचनाओं के अध्ययन से इस प्रकार की चुनौतियों से निबटा जा सकता है। अतः हम साहित्य और समाज के क्षेत्र में उनके कृतियों के वैश्विक अवदान का अध्ययन करना चाहेंगे ताकि भारत की प्राचीन वैश्वीकरण की उदात भावना 'वसुधैव कुटुम्बकं' का भाव-प्रकाशन हो सके।

स्वामी परांकुशाचार्य मगध के एक ख्यात संत, कवि एवं साहित्यकार थे। वे मानवतावाद के साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। उनकी रचनाओं में विश्व कल्याण की भावना निहित है। वे मानव मात्र का कल्याण चाहते थे। संत किसी भी ऐसे बंधन में बंधा नहीं होता जो स्व और पर की भावना को बढ़ावा देता हो। संत का एक ही उद्देश्य होता है- जीवों का कल्याण एवं मानव की मुक्ति का मार्ग प्रसस्त करना। श्री परांकुशाचार्य भी राष्ट्र की सीमाओं में न बँधकर समस्त विश्व के लिए कल्याण की कामना करते हैं। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी है। उन्होंने मानव के कल्याण एवं मार्गदर्शन के लिए हीं ग्रंथों का प्रणयन किया था। यदि साहित्यिक भाषा में कहा जाय तो वे 'कला जीवन के लिए' (Art For Life Sake) में विश्वास करते थे। उनके दृष्टि में ग्रंथों का मूल उद्देश्य जीवन को सन्मार्ग पर लाकर कल्याण का द्वार खोलना है।

ईश्वर एवं संतों की कृपा से मानव भक्ति के सुपथ पर अग्रसर होता है और जीवन में ताप-त्रयी से मुक्ति पाता है।

"राम कृपा या संत कृपा से, भक्ति रत्न नर पाते हैं।
जीवन के कल्याण मार्ग यह, सब सद्ग्रंथ बताते हैं।"[1]

साहित्य के अध्ययन में अध्येता के दृष्टिकोण की प्रमुख भूमिका होती है। किसी भी साहित्य में नाकारात्मक अर्थ करने की थोड़ी गुंजाईस बनी रहती है। वैसे में कुछ अध्येता एवं समीक्षक साहित्य में अन्वित सच्चे भावों व अर्थों का अवगाहन न कर सतही अर्थों का सहारा लेकर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। ऐसे अर्थहीन मीमांसा करने वाले को स्वामी परांकुशाचार्य ने नेक सलाह दी है जो साहित्य के अध्ययन में सकारात्मक व सराहनीय दृष्टिकोण का प्रतिपादन करता है तथा साहित्य को जीवनोपयोगी बनाने में मदद मिलती है। उन्होंने लिखा है- "किसी भी प्रसंग के अर्थ ग्रहण के लिए संयोग, विप्रयोग, साहचर्य विरोध, अर्थ प्रकरण, लिंगादि नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। इन सबों के नियंत्रण बिना किया गया अर्थ अनर्थ हो जाता है।"[2] अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता ही कि उन्होंने साहित्यिक जगत को एक अंतर्दृष्टि प्रदान की है ताकि किसी भी ग्रंथ का अध्ययन कर उसके वास्तविक अर्थ को ग्रहण किया जा सके न कि उसके अनर्थ को प्रकाशित कर अर्थ के भावना के साथ खिलवाड़ किया जा सके।

श्री परांकुशाचार्य ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाज और संसार को दिशा प्रदान की है। उन्होंने अनुभव किया था कि चाहे समाज हो या विश्व बिना वंचित वर्ग के कल्याण किये बगैर समाज या संसार का कल्याण व विकास सम्भव नहीं हो सकता। इसीलिए उन्होंने द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण को माध्यम बनाकर एक शासक को कर्त्तव्य निर्वहन के लिए एक रेखा खिंची है।

"कछुआ-कोल-किरात-भील-वनचर समुदायी।
कंजर पांवर धोन सबन के करत मिताई।"[3]

यदि वास्तव में आज विश्व के विकसित देश विकास की दौर में पिछड़े लोगों तथा पिछड़े देशों का साथ दे तो विश्व का विकास होते देर नही लगेगा। वर्तमान युग भौतिकतावाद का है। भौतिक प्रगति को हीं मानव का परम लक्ष्य मान किया गया है। लेकिन भौतिकतावादी मानव सभी सुख-सुविधाओं के प्रप्ति के बाद भी आज बेचैन है। उसे शान्ति की प्राप्ति नहीं हो रही है। स्वामी परांकुशाचार्य ने इस भ्रमित संसार को उचित दिशा प्रदान की है। उन्होंने ईश्वर की शरणागति को हीं मानव का परम लक्ष्य

बताया है। ईश्वर की शरण में जाने पर सभी प्रकार की सांसारिक बाधाओं का नाश हो जाता है तथा मानव अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति की ओर उन्मुख हो जाता है।

"भवभीति का ना डर कभी, जो मन बसे हरिगीतिका।
आशा बड़ी युग चरण की है, है कृपा परिपालिका।"[4]

स्वामी परांकुशाचार्य ने सामजिक समीकरणों की रूप-रेखा भी अपने साहित्य में खिंची है, जिसपर अमल कर जीवन को संतुलित किया जा सकता है। भारतीय वांग्मय में अमीर के साथ गरीब के मित्रता का उल्लेख मिलता है, जिसका मिशाल कृष्ण-सुदामा की मित्रता है। लेकिन व्यवहारतः ऐसे मित्रता सांसारिक लोक में स्थिर नही रह पाता है। स्वामी जी ने प्रमुख सामजिक समीकरण को वाणी देते हुए कहा है कि दोस्ती, विवाह और दुश्मनी – ये तीनों अपने के बराबर वालों के बीच ही करनी चाहिए अन्यथा संबंध विच्छेद की समस्या बनी रहती है। यथा-

"सब के सम बैर विवाह सखा,
तुम देखहु नीति न ग्रंथ जहाँ।"[5]

स्वामी जी ने एक और प्रमुख सामजिक समीकरण को रेखांकित करते हुए कहा है कि व्यक्ति को हमेशा तोल-मोल कर बोलना चहिये। ऐसे वचन का प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए जो दुसरे के ह्रदय को ठेस पहुंचाए। वे कहते हैं कि तीर और गोली से पैदा घाव तो शरीर से जाते रहता है, गहरी मन का विषाद भी समय के साथ चला जाता है, लेकिन कठोर वचन से उत्पन्न घाव मन से नहीं जाता है और यह हमेशा मन को टीस और कचोट पहुंचाते रहता है। इसका उदाहरण ध्रुव का इतिहास बताता है।

"तीर गोली का घाव तन से जाता है।
घोर दुखद विषाद भी मन से जाता है।
कठिन वचन का न घाव मन से जाता है।
सो यह ध्रुव का इतिहास हीं बताता है।"[6]

अतः ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे संबंधों में प्रगाढ़ता आए, न कि संबंध विच्छेद की नौबत आ जाए। यदि जो कोई भी इस पर अमल करेगा तो वह कभी भी पचड़ा में नहीं पड़ सकता है। श्री परांकुशाचार्य ने संपत्ति से उत्पन्न अनर्थ की ओर भी संकेत किया है। उन्होंने अत्यधिक संपत्ति को दुर्गति का कारण माना है। उनके अनुसार सभी अनर्थो की जड़ संपत्ति हीं है। इसीलिए उन्होंने इसके भयंकर परिणाम से लोगों को अवगत कराते हुए कहा है कि-"चोरी, हिंसा, झूठ बोलना, दंभ, काम, क्रोध, गर्व, अहंकार, भेद बुद्धि, बैर, अविश्वास, स्पर्धा, लंपटता, जुआ, मदिरापान आदि अनर्थ धन के

कारण माने जाते है। अतः कल्यानार्थियों को दूर से हीं धन को छोड़ देना चाहिए।"[7] स्वामी जी के कहने का आशय यह है कि धन एकत्रीकरण सामान्य जरूरत भर हीं करना चाहिए। इसके अत्यधिक संचय से मानव में दुर्गुणों का जन्म होता है, जो विष से भी भयंकर और घातक होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वामी परांकुशाचार्य का साहित्य समाज और संसार का मार्गदर्शन कर कल्याण करने में पूर्ण समर्थ है। इनकी रचनाओं की उपादेयता वर्तमान संदर्भ में और बढ़ गयी है, जब चारों ओर भौतिकतावाद और अर्थ संचय की होड़ सी मची है। स्वामी जी के साहित्य के अवगाहन से जीवन में आध्यात्मिकता का आधान होता है जो जीवन को सुमार्ग पर लाकर उचित ढंग से जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है जो सम्पूर्ण विश्व की आवश्यकता है। इनकी रचना पूर्ण रूपेण समाज शोधन कर विश्व कल्याण करने में शक्षम है तथा साहित्यिक जगत को मानव कल्याण का मार्ग सुझाने में समर्थ है।

---

[1] प्रह्लाद चरित्र, पृष्ठ- 06
[2] साम्प्रदायिक प्रश्नोत्तर, पृष्ठ- 02
[3] मित्र कृष्ण-सुदामा, पृष्ठ- 08
[4] अर्चागुणगान, पृष्ठ- 09
[5] मित्र कृष्ण-सुदामा, पृष्ठ- 07
[6] ध्रुव चरित्र, पृष्ठ- 10
[7] सम्पत् में विपत् और दीनता में राम, पृष्ठ- 13

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें